



गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती समारोह तुलसी के राम



परिचर्चा सह संगोष्ठी

हिन्दी विभाग
डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

एवं

आयोध्या शोध संस्थान
(संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश)

का
संगुक्त आयोजन

23 अगस्त 2023

कार्यक्रम विवरण

तुलसीदास का महत्त्व : निबन्ध प्रतियोगिता

प्रातः 11 बजे

प्रतिभागी - छात्र-छात्राएँ

तुलसीदास की कविताओं का छंद पाठ

मध्याह्न 12 बजे

प्रतिभागी - छात्र-छात्राएँ

तुलसी के राम : परिचर्चा सह संगोष्ठी

अपराह्न 1 बजे

विशिष्ट वक्ता : प्रो. अवधेश प्रधान

पूर्व आचार्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रो. बलिराज पाण्डेय

पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

अध्यक्षता : प्रो. सत्यगोपाल जी

प्राचार्य, डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज, वाराणसी

प्रो. राकेश कुमार राम

अध्यक्ष हिन्दी विभाग
डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज

प्रो. समीर कुमार पाठक

संयोजक
परिचर्चा सह संगोष्ठी

डॉ. अमित कुमार पाण्डेय

कार्यक्रम समन्वयक
आयोध्या शोध संस्थान

आयोजन समिति

डॉ. राकेश कुमार द्विवेदी, डॉ. अस्मिता तिवारी, डॉ. नीलम सिंह, डॉ. विश्वमोलि



जीने का जज्बा सिखाते हैं तुलसी के राम: प्रो. अवधेश प्रधान

पूर्वांचल राज्य

वाराणसी। डीएवी पीजी कॉलेज में बुधवार को हिन्दी विभाग एवं अयोध्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त तत्वावधान में तुलसी जयंती के अवसर पर तुलसी के राम विषयक परिचर्चा सह संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रख्यात आलोचक प्रोफेसर अवधेश प्रधान ने कहा कि तुलसी दास की दृष्टि में राम शक्ति, शील और सौंदर्य की त्रिमूर्ति है। तुलसी करोड़ों करोड़ों लोगों को बल देते हैं, हारे हुए व्यक्ति में जीवन जीने का जज्बा सिखाती है तुलसी की कविताएं। जितने सरल तुलसी के राम हैं उतने ही सरल तुलसीदास स्वयं भी हैं, उनका साहित्य इतना सरल है कि समाज का अशिक्षित वर्ग भी उनकी भाषा से खुद को जोड़ पाता है। तुलसी हर उस दीन, दुखी, वंचित और असहायों के लिए भी खड़े दिखलाई पड़ते हैं जो समाज में हासिये पर हैं। उन्होंने कहा कि



महात्मा गांधी ने नेता बनने से पूर्व ही तुलसी कृत रामचरित मानस का अध्ययन कर लिया था। भारत से बाहर गए गिरमिटिया मजदूर भी जीवन में आशा की किरण के लिए अपने साथ मानस की प्रतियां ही ले गए थे।

अध्यक्षता करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बलिराज पाण्डेय ने कहा कि तुलसी के राम मनुष्यता की प्रेरणा देते हैं, समाज को किस तरह के मानवता की आवश्यकता है यह तुलसी के राम में प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ता है।

उन्होंने कहा कि आज मानस की व्याख्या जाति के आधार पर की जा रही है जो सर्वथा अनुचित है। संचालन कार्यक्रम संयोजक प्रो. समीर कुमार पाठक एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राकेश कुमार द्विवेदी ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रो. राकेश कुमार राम, प्रो. ऋचाराणी यादव, प्रो. मिश्रीलाल, प्रो. अनूप मिश्रा, प्रो. पूनम सिंह, डॉ. इंद्रजीत मिश्रा, डॉ. मीनू लाकड़ा, डॉ. संजय सिंह, डॉ. अस्मिता तिवारी, डॉ. विश्वमौली, डॉ. नीलम सिंह, डॉ. महिमा सिंह, डॉ. दीपक कुमार शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समन्वयक भारत अध्ययन केंद्र के डॉ. अमित कुमार पाण्डेय रहे।

तुलसी कृत पदों का हुआ गायन- कार्यक्रम में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत एवं मंच कला संकाय के सहायक आचार्य डॉ. कुमार अम्बरीष चंचल ने तुलसीदास की रचनाओं के पदों का सुमधुर गायन किया।

उपस्थित रहे।

जीने का जज्बा सिखाते हैं तुलसी के राम- प्रोफेसर अवधेश प्रधान

डीएवी पीजी कॉलेज में बुधवार को हिन्दी विभाग एवं अयोध्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त तत्वावधान में तुलसी जयंती के अवसर पर तुलसी के राम विषयक परिचर्चा सह संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रख्यात आलोचक प्रोफेसर अवधेश प्रधान ने कहा कि तुलसी दास की दृष्टि में राम शक्ति, शील और सौंदर्य की त्रिमूर्ति है। तुलसी करोड़ों करोड़ों लोगों को बल देते हैं, हारे हुए व्यक्ति में जीवन जीने का जज्बा सिखाती है तुलसी की कविताएं। जितने सरल तुलसी के राम हैं उतने ही सरल तुलसीदास स्वयं भी हैं, उनका साहित्य इतना सरल है कि समाज का अशिक्षित वर्ग भी उनकी भाषा से खुद को जोड़ पाता है। तुलसी हर उस दीन, दुखी, वंचित और असहायों के लिए भी खड़े दिखलाई पड़ते हैं जो समाज में हासिये पर हैं। अध्यक्षता करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर

बलिराज पाण्डेय ने कहा कि तुलसी के राम मनुष्यता की प्रेरणा देते हैं, समाज को किस तरह के मानवता की

राकेश कुमार राम, प्रोफेसर ऋचाराणी यादव, प्रोफेसर मिश्रीलाल, प्रोफेसर अनूप मिश्र, प्रोफेसर पूनम सिंह,



आवश्यकता है यह तुलसी के राम में प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ता है। उन्होंने कहा कि आज मानस की व्याख्या जाति के आधार पर की जा रही है जो सर्वथा अनुचित है। संचालन कार्यक्रम संयोजक प्रोफेसर समीर कुमार पाठक एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर राकेश कुमार द्विवेदी ने दिया। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रोफेसर

डॉक्टर इंद्रजीत मिश्र, डॉक्टर मीनू लाकड़ा, डॉक्टर संजय सिंह, डॉक्टर अस्मिता तिवारी, डॉक्टर विश्वमौली, डॉक्टर नीलम सिंह, डॉक्टर महिमा सिंह, डॉक्टर दीपक कुमार शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समन्वयक भारत अध्ययन केंद्र के डॉक्टर अमित कुमार पाण्डेय रहे। तुलसी कृत पदों का हुआ गायन

कार्यक्रम में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संगीत एवं मंच कला संकाय के सहायक आचार्य डॉक्टर कुमार अम्बरीष चंचल ने तुलसीदास की रचनाओं के पदों का सुमधुर गायन किया। उन्होंने सबसे पहले भजमन राम चरण सुखदायी के बाद श्रीरामचंद्र कृपालु भजमन आदि पदों का गायन किया। उनके साथ संगत तबले पर पंकज राय एवं हारमोनियम पर विककी कुमार रहे। छन्द गान में विद्यार्थी उदय भास्कर, नीतीश कुमार आदि ने सहभागिता की। वहीं तुलसीदास का महत्व विषय पर निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें १०० से अधिक विद्यार्थी शामिल हुए। निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार रजत यादव, द्वितीय पुरस्कार दयानंद, तृतीय पुरस्कार सत्यम कुमार को मिला। वहीं छन्द पाठ प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार कनिष्क त्रिपाठी, द्वितीय पुरस्कार विश्वास तिवारी एवं तृतीय पुरस्कार उज्ज्वल पांडे को मिला।

मैजिक और कार में टक्कर, तीन घायल

ताता मंचालक दत्ताकांत में फगर

गोस्वामी तुलसीदास जयंती कार्यक्रम रिपोर्ट

हिंदी विभाग, डीएवी पी.जी. कॉलेज, वाराणसी और अयोध्या शोध संस्थान,
संस्कृति मंत्रालय, लखनऊ का संयुक्त आयोजन

- जीने का जज्बा सिखाते है तुलसी के राम - प्रो. अवधेश प्रधान
- तुलसी मानवीव आदर्श का मानदंड प्रस्तुत करते हैं - प्रो. बलराज पाण्डेय

वाराणसी, 23 अगस्त। डीएवी पीजी कॉलेज में बुधवार को हिन्दी विभाग एवं अयोध्या शोध संस्थान, संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार के संयुक्त तत्वावधान में तुलसी जयंती के अवसर पर तुलसी के राम विषयक परिचर्चा सह संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रख्यात आलोचक प्रोफेसर अवधेश प्रधान ने कहा कि तुलसीदास की दृष्टि में राम शक्ति, शील और सौंदर्य की त्रिमूर्ति हैं। तुलसी करोड़ों करोड़ों लोगों को बल देते हैं, हारे हुए व्यक्ति में जीवन जीने का जज्बा सिखाती है तुलसी की कविताएं। जितने सरल तुलसी के राम हैं उतने ही सरल तुलसीदास स्वयं भी हैं, उनका साहित्य इतना सरल है कि समाज का अशिक्षित वर्ग भी उनकी भाषा से खुद को जोड़ पाता है। तुलसी हर उस दीन, दुखी, वंचित और असहायों के लिए भी खड़े दिखलाई पड़ते हैं जो समाज में हाशिये पर हैं। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने नेता बनने से पूर्व ही तुलसी कृत रामचरितमानस का अध्ययन कर लिया था। भारत से बाहर गए गिरमिटिया मजदूर भी जीवन में आशा की किरण के लिए अपने साथ मानस की प्रतियां ही ले गए थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. बलिराज पाण्डेय ने कहा कि तुलसी के राम मनुष्यता की प्रेरणा देते हैं, समाज को किस तरह के मानवता की आवश्यकता है यह तुलसी के राम में प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ता है। तुलसीदास की कविता में मानवीय आदर्श का मानदंड प्रस्तुत है। त्याग, सद्भाव, कर्तव्यबोध और सामाजिकता का व्यापक परिप्रेक्ष्य उनकी कविताओं में विनयस्त है। उन्होंने कहा कि आज मानस की व्याख्या जाति के आधार पर की जा रही है जो सर्वथा अनुचित है। तुलसी जयंती कार्यक्रम का शुभारम्भ उनके चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन के साथ मुख्य अतिथि प्रो. अवधेश प्रधान ने किया और विषय प्रतिपादन करते हुए परिचर्चा संयोजक प्रो. समीर कुमार पाठक ने उनकी काव्य अर्थवत्ता की वर्तमान प्रसंगिकता को रेखांकित किया। विषय प्रतिपादन करते हुए परिचर्चा के संयोजक डा. समीर कुमार पाठक ने कहा कि कवि साहित्यकार

समाज में आकाशदीप की तरह होते हैं उनकी स्मृति हर दौर में मूल्यनिष्ठ सामाजिकता के लिए अपना नया संदर्भ तलासती है। इस अवसर पर अयोध्या शोध संस्थान से नामित कार्यक्रम समन्वयक डा. अमित कुमार पाण्डेय ने कार्यक्रम की रुपरेखा प्रस्तुत की।